পাঠ
পাঠ **20**

পরিবেশ সচেতনতা

মোহন : ওঃ! কি ভীষণ গরম পড়েছে।

গৌতম : গরম পড়বে বৈকি। অনেকদিন বৃষ্টি হয়নি যে, আজকাল আবহাওয়াও তো পাল্টে যাচ্ছে।

মোহন : আরে, যাবে নাম্প বা কেন? আমরা চারিদিকের পরিবেশ নষ্ট করে ফেলেছি। তাম্প এম্প অবস্থা। যদি চারিদিকে প্রচুর গাছপালা থাকতো, তাহলে বৃষ্টিও হতো। যদি বৃষ্টি হতো তাহলে এত গরম পড়ত না।

গৌতম : ব্যাপার কি জানেন, মানুষ নিজের দরকারে গাছপালা কেটেছে। জঙ্গল কেটে তারা বসতি গড়েছে। আবার কল-কারখানা বানিয়েছে। সেম্প কল-কারখানার ধোঁয়ায় পরিবেশ দূষিত হচ্ছে।

पर्यावरण के प्रति सावधानी

मोहन : ओह! क्या भीषण गर्मी पड़ी है।

गौतम : गर्मी क्यों नहीं पड़ेगी? बहुत दिनों से पानी जो नहीं बरसा है। आजकल जलवायु भी तो बदल रही है।

मोहन : बदलेगी क्यों नहीं? हमने चारों ओर पर्यावरण दूषित कर रखा है। इसी कारण यह स्थिति है। यदि चारों ओर पेड़ पौधे होते तो बारिश भी होती। यदि बारिश होती तो इतनी गर्मी भी नहीं पड़ती।

गौतम : बात क्या है, आप जानते हैं। मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार पेड़ पौधों को काट डाला है। जंगल काट कर उन्होंने बस्तियाँ बसा ली हैं। कल-कारखाने बना लिए हैं और उन्हीं कल-कारखानों के धुँए से वातावरण भी दूषित हो रहा है।

মোহন : আসল কথা, পরিবেশ সম্পর্কে মানুষ সচেতন ছিল না। তাম্প আমাদের এম্প দুরবস্থা। যদি আমরা পরিবেশের প্রতি সচেতন না হম্প, তাহলে অদূর ভবিষ্যতে আমাদের বেঁচে থাকাম্প মুশকিল হয়ে যাবে।

গৌতম : তাম্প তো। ভূপালের কথাম্প ধরুন না। গ্যাস দুর্ঘনায় কতো লোক মারা গেল। যদি কারখানা শহর থেকে অনেক দূরে থাকতো তাহলে এত লোক মরতো না।

মোহন : ঠিকম্প বলেছেন। যদি ঐ কারখানার আশেপাশে অনেক গাছপালা থাকতো তাহলে দুর্ঘনার প্রকোপ অনেক কম হতো। শুধু তাম্প নয়। যদি, অনেকদিন বৃষ্টি না হয় তবে খাবার জলের অভাব দেখা দেবে। মানুষের কতোম্প না অসুবিধা হবে।

গৌতম : সবচেয়ে বড় কথা হল বৃষ্টি না হলে চাষ আবাদ হয় না। চাষ আবাদ না হলে বাজারে খাদ্য শস্যের যোগান কমে যায়। জিনিসপত্রের দাম বেড়ে যায়। তখন মানুষের দুর্দশার সীমা থাকে

मोहन : दरअसल पर्यावरण के संबंध में मनुष्य सावधान नहीं रहे। इसीलिए हमारी यह दुर्दशा है। यदि हम पर्यावरण के प्रति सावधान नहीं रहे तो निकट भविष्य में हमारे लिए जीवित रहना ही मुश्किल हो जाएगा।

गौतम : यही तो। भोपाल की ही बात लीजिए न। गैस दुर्घटना में कितने ही लोग मारे गए! यदि वह कारखाना शहर से काफ़ी दूर होता तो इतने आदमी नहीं मरते।

मोहन : ठीक ही कह रहे हैं। यदि उस कारखाने के आसपास बहुत सारे पेड़ पौधे होते तो दुर्घटना का प्रभाव कम हुआ होता। केवल इतना ही नहीं। यदि बहुत दिनों तक बारिश नहीं हो तो पीने के पानी का भी अभाव हो जाएगा। तब सब मनुष्यों को बहुत परेशानियाँ हो जाएँगी।

गौतम : सबसे बड़ी यह बात है कि, बारिश के बिना खेती नहीं फल फूल सकती है। खेती न फलने फूलने से बाज़ार में खाद्यान्नों की आपूर्ति कम हो जाती है। वस्तुओं के दाम बढ़ जाते हैं। तब मनुष्यों की दुर्दशा की सीमा नहीं रहती।

मोहन : सच बात कह रहा हूँ, कि पेड़ पौधे

না।

মোহন : সত্যি কথা বলতে কি, গাছপালা থাকলে আমাদের এতসব সমস্যা থাকতো না। আজকাল অনেক জায়গায় নাগরিকদের সচেতন করার জন্য নাগরিক সমিতি গড়ে উঠেছে। আসুন, আমরাও আমাদের শহরে এম্প রকম একা সমিতি গড়ি।

होने से हमलोगों की ये समस्याएँ नहीं रहती हैं। आजकल अनेक स्थानों पर नागरिकों को सावधान करने के लिए नागरिक समितियों का गठन किया गया है। आइए, हमलोग भी अपने शहर में इस प्रकार की एक समिति का गठन कर लें।

শব্দার্থ

শব্দ	অর্থ
আবহাওয়া	पर्यावरण
গাছপালা	पेड़ पौधे
জঙ্গল	जंगल
বসতি	बस्ती
গড়েছে	गठन किया है
বানিয়েছে	बनाया है
দুরবস্থা	दुर्दशा, बुरी हालत
অদূর	निकट
ভবিষ্যতে	भविष्य में
বেঁচে	जीवित
থাকাম্প	रहना ही
মুশকিল	मुश्किल

কতো	कितना
মারা	मारे गए
চাষ	खेती
খাদ্য	खाद्य
শস্যের	फसल का
যোগান	आपूर्ति
সীমা	सीमा
সমস্যা	समस्या
সমিতি	समिति
গড়ি	गठन करना, तैयार करना

অভ্যাস

I. উপযুক্ত শব্দ প্রয়োগ করে বাক্য সম্পূর্ণ করুন।

1. আপনি যদি _____ , তাহলে আপনি দেখতে পেতেন।
2. তুমি যদি আমার কথা _____ , তাহলে অসুবিধা হত না।
3. সে যদি স্কুলে _____ , তাহলে ঠিকমত পড়াশোনা করত।
4. আমি যদি চিঠি _____ , তাহলে উনি আসতেন।
5. আমরা যদি সিনেমা না _____ , তাহলে দেরী হত না।
6. ঠিক সময়ে যদি গাছের যত্ন _____ , তাহলে আজ এমন ক্ষতি হত না।
7. একমাস আগে যদি ীকি _____ , তবে নিশ্চিতভাবে আরামে যেতে পারতে।
8. তুমি যদি লাল জামা _____ , তবে তোমাকে খুব সুন্দর লাগবে।
9. পাহাড়ে যদি _____ , তবে ভাল জুতো পরতে হবে।

10. শিশুরা যদি উপযুক্ত পরিবেশে _____ , তবে তারা সুস্থ স্বাভাবিকভাবে বাঁচতে পারবে।

II. উদাহরণ অনুযায়ী নিম্নোক্ত বাক্যগুলিতে 'যদি, তাহলে, তবে' বসিয়ে বাক্যগুলি পরিবর্তন করুন।

উদাহরণ : শেখর আগে লিখলে আমি যেতাম না।

যদি শেখর আগে লিখত তবে আমি যেতাম।

1. তুমি এলে অসুবিধা হত না।
2. তুমি না এলে আমি যেতাম না।
3. সে এলে আমি যেতাম না।
4. রামবাবু না লিখলে আমি যেতাম।
5. তুমি খেললে আমি যেতাম না।

III. উপযুক্ত স্থানে 'যদি, তাহলে, তবে' বসিয়ে বাক্যগুলি পরিবর্তন করুন।

1. তুমি এলে আমি অপেক্ষা করতাম।
2. আমার ঘড়ি থাকলে দেরি হত না।
3. উনি বিকেলে গেলে ডাক্তারের দেখা পেতেন।
4. সে দেখা করতে এলে আমার দেরী হত না।
5. আমি অপেক্ষা করলে দেখা পেতাম।

IV. নীচে দেওয়া বাক্যগুলিকে নিষেধাত্মক বাক্যে পরিণত করুন।

1. তুমি যদি আসতে তাহলে অসুবিধা হত না।
2. আপনি যদি না আসতেন তাহলে আমি আসতাম।

3. সে এলে আমি যেতাম না।

4. রামবাবু যদি না লিখতেন আমি যেতাম।

5. তুমি খেললে আমি খেলবো না।

V. উদাহরণ অনুযায়ী বাক্যগুলিকে পরিবর্তন করুন।

উদাহরণ : যদি তুমি আসতে তাহলে আমি যেতাম
তুমি এলে আমি যেতাম।

1. ছাত্ররা যদি না পড়ে তাহলে তারা ফেল করবে।

2. যদি ীকি না পাম্প তাহলে খেলা দেখতে পারবো না।

3. যদি তুমি যাও তবে আমি যাবো।

4. যদি দোকানে জিনিস পাম্প তাহলে রান্না করবো।

5. যদি সাঁতার কাটো তাহলে স্বাস্থ্য ভাল থাকবে।

পড়ে বুঝুন

ভারতের জলবণ্টন সমস্যা भारत में जल वितरण की समस्याएँ

আমাদের দেশে অনেক সমস্যা রয়েছে। তার মধ্যে একটা সমস্যা হলো সঠিক জল বণ্টন। ভারতবর্ষের মতো বড় দেশে কোথাও অতিবৃষ্টি আবার কোথাও অনাবৃষ্টি। অনাবৃষ্টি হলে খরা আবার অতিবৃষ্টি হলে বন্যা। যদি সঠিক জল বণ্টন করা যেত, তাহলে ফসল ফলনের সুবিধে হত। শুধু তাম্প নয় বন্যা হলে প্রতি বছর কোটি কোটি াকার ফসল এবং সম্পত্তি নষ্ট হয় এবং হাজার হাজার মানুষ মারা যায়। সেম্প রকম খরাতেও গবাদি পশু এবং গরীব মানুষের প্রাণ যায়। খরা হলে জলের অভাবে চাষ হয় না। তার ফলে গ্রামের ক্ষেতমজুরও কাজ পায় না। অনাহারে অর্ধাহারে তাদের দিন কাটে। যে সব অঞ্চলে বেশী বৃষ্টি হয়, সেম্প সব অঞ্চলের নদীগুলি যদি খরা প্রধান অঞ্চলের নদীর সঙ্গে যোগ করে দেওয়া যায় তাহলে জলের সুষম বণ্টন হয়। ভাবতবর্ষের বিভিন্ন অঞ্চলে

এম্পভাবে সুষম জল বণ্টন সম্ভব। কিন্তু এর জন্যে কৌ কৌ াকার দরকার। যদি মানব সম্পদকে কাজে লাগানো যায়, তাহলে কিন্তু াকী কোনো সমস্যা হবে না। কেননা ভারতের মতো জনশক্তি বহুল দেশে জনসাধারণকে যদি এম্প কাজে লাগানো হয় তাহলে খুব কম খরচেম্প এম্প ধরণের কাজ করা সম্ভব। চীনে এম্প ধরণের জনসাধারণের সক্রিয় অংশ গ্রহণের ফলে অনেক বড় বড় খাল কী সম্ভব হয়েছিল। যদি চীনে ঐ সম্ভব হয় আমাদের দেশেও তাহলে তা সম্ভব। কেননা চীনের মতো ভারতও জনশক্তিতে পূর্ণ। কেবল জনশক্তিকে ঠিক মতো কাজে লাগানো দরকার।

শব্দার্থ

শব্দ	अर्थ
খরা	सूखा
বন্যা	बाढ़
সুষম	समान, बराबर
সঠিক	सही, ठीक
ফসল	फसल
কৌ	करोड़
সম্পত্তি	संपत्ति
প্রাণ	प्राण
প্রধান	प्रधान, प्रमुख
ক্ষেতমজুর	खेत मज़दूर, कृषि मज़दूर
অনাহারে	भूख में
অর্ধাহার	आधा भोजन
অঞ্চলে	इलाके में, अंचल में

শক্তি	শক্তি
জনসাধারণ	আম আদমী, জন সাধারণ
অংশগ্রহণ	ভাগীদারী

অভ্যাস

I. নীচে দেওয়া প্রশ্নের উত্তর লিখুন।

1. অনাবৃষ্টি হলে কি হয়?
2. অতিবৃষ্টি হলে কি হয়?
3. দেশে জলবণ্টন কিভাবে করা সম্ভব?
4. বেশী টাকা খরচ না করে কিভাবে দেশের কাজ করা সম্ভব?
5. কোন্ দেশ মানব-সম্পদকে দেশের কাজে বেশী করে লাগিয়েছে এবং তারা কি কাজ করেছে?

II. প্রদত্ত দর্শিত বাক্যের মধ্যে পাঁচজোড়া এমন শব্দ খুঁজে বার করুন যেগুলি সমার্থক।

1. আমাদের দেশে ক্ষেতমজুরদের অবস্থার এখন বেশ উন্নতি হয়েছে।
2. কোলকাতায় খাবার জিনিস খুব সস্তা।
3. দক্ষিণ ভারতে এসে বাঙালীদের ভাষা নিয়ে সমস্যা হয়।
4. ভারতের জনসাধারণের মধ্যে এখনও অনেকে কুসংস্কারে আচ্ছন্ন হয়ে আছেন।

5. লেখাপড়ায় যত্ন নেওয়া উচিৎ।
6. অসুস্থ হলে অবশ্যম্প সময় মত ডাক্তার দেখাতে হয়, নাহলে মুশকিলে পড়তে হয়।
7. কৃষিপ্রধান দেশে কৃষকম্প প্রধান শক্তি।
8. স্বামীজী কোনো কিছুম্প গ্রহণ করলেন না।
9. ভারতের মানুষের খাদ্য তালিকায় সাধারণতঃ ভাত থাকে।
10. জনতার দাবী সবসময় মানা সম্ভব নয়।

III. প্রদত্ত দর্শি বাক্যের মধ্যে পাঁচজোড়া এমন শব্দ খুঁজে বার করুন যেগুলি বিপরীতার্থক।

1. প্রকৃত শিক্ষিত মানুষ আজকাল দেখাম্প যায় না।
2. রাধামাধব আজ জীবনের পরীক্ষায় সফল হয়েছে।
3. ঊষা আবার নতুনভাবে জীবনের প্রতি দৃষ্টি দিয়েছেন।
4. সময় মতোম্প ঈশ্বর সাধনা শুরু করা উচিৎ।
5. কেরল রাজ্যে সাক্ষরতার হার সব থেকে বেশী।
6. জীবনের শেষদিন পর্যন্ত সৎ থাকা উচিৎ।
7. পুরানো চাল ভাতে বাড়ে।
8. কোনো কাজে বিফল হলে মন খারাপ করা উচিৎ নয়।
9. নিরক্ষরতা দেশের লজ্জা।
10. শিক্ষিত মানুষের মধ্যেও অশিক্ষিত মনোভাব লুকিয়ে থাকে।

IV. হিন্দিতে অনুবাদ করুন।

যদি দেশের উন্নতি করতে হয় তবে সবাম্পকে কঠোর পরিশ্রম করতে হবে। যদি দেশে কৌি কৌি মানুষ থাকে তবে তার মধ্যে মাত্র কয়েকজনম্প কেবল সফল মানুষ থাকে। ভারতবর্ষের মত এতবড় দেশে খুব কম সংখ্যক মানুষম্প তার কর্মক্ষেত্রে সফলতা লাভ করেন।

দেশের উন্নতি নির্ভর করে দেশের নাগরিকেরম্প উপর। দেশের জনসাধারণ যদি সচেতন না হয় তাহলে ভারতের উন্নতি হওয়া সম্ভব নয়। আমাদের দেশে সব থেকে বড় সমস্যা প্রাকৃতিক দুর্যোগ। যেমন -- খরা, বন্যা প্রভৃতি, এছাড়াও সুষম খাদ্যের অভাব, অনাহারও। ভারতের বৃহৎ অঞ্চলে ও বৃহৎ অংশের মানুষম্প এম্প সমস্যায় ভোগেন। যদি এম্প সমস্যার সমাধান না হয় তাহলে দেশের অদূর ভবিষ্যতে দুববস্থার শেষ থাকবে না। যদিও ভারত কৃষি প্রধান দেশ এবং এখানে উপযুক্ত আবহাওয়ায় চেষ্টা করলেম্প নানা গাছপালা লাগানো, নানা সময়ে নানা ফসল ফলানো যায় ও ধনের সমবণ্টন হলে দেশের অর্থাভাব ও দুরবস্থা থেকে বেঁচে থাকা সম্ভব।

V. बंगला में अनुवाद कीजिए।

मनासा
३ सितंबर, २००४

श्रीमान् संपादक महोदय
संस्कार साप्ताहिक मनासा
मध्यप्रदेश

महोदय,

आपके लोकप्रिय साप्ताहिक समाचार पत्र में कल दो लेख पढ़े। एक है "समाज में मानवमूल्यों का ह्रास"। दूसरा है "समाज में नैतिकस्तर को बनाए रखने में जनभागीदारी"। कुछ दिन पहले, संभवतः पिछले रविवारीय अंक में एक लेख छपा था "नैतिक शिक्षा में संतों का योगदान"।

इन तीनों लेखों का केंद्रबिंदु 'नैतिकता' ही है। आपके इस साप्ताहिक पत्र ने इसप्रकार के लेख छापकर जिसप्रकार जनचेतना जागृत करने का प्रयत्न किया है वह सराहनीय है। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

वस्तुतः मानवमूल्यों के गिरते स्तर के प्रति हम सब समान रूप से जवाबदार हैं। भौतिक सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़ा-होड़ी ने हमें बहुत ही स्वार्थी बना दिया है। इस स्वार्थ भावना के कारण हमारा नैतिक स्तर इतना गिर गया है कि, हमने अपने ऋषियों और संतों द्वारा दी गई शिक्षाओं को भुला दिया है।

अपनी संस्कृति से भी हम बहुत दूर होते जा रहे हैं। संस्कृति समाज में नैतिकता स्थापित करने का बहुत बड़ा आधार होती है। यदि हम अपने महापुरुषों की जीवनशैली का अनुसरण कर लें तो हमारा नैतिक स्तर सदा उच्च बना रहेगा।

हमारे संतों ने अपनी अनुभवी वाणी द्वारा एवं अपने साहित्य द्वारा हमें नैतिक दायित्व का बोध करवाया है। आज भी समय-समय पर हमारे संत-जन हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। सभी धर्मों के संतों का संदेश एक जैसा ही श्रेष्ठ है।

यदि हम स्वयं को नहीं सुधारेंगे, यदि हम स्वयं ही नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में नहीं लाएँगे, तो समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना संभव नहीं है।

यदि हम दूसरों के दोष देखने के बजाए अपने आचरण को सुधारना शुरु कर दें तो हमारा समाज स्वयं ही सुधर जाएगा। क्योंकि, हम सब समाज का ही तो भाग हैं। हमारे संयोग से ही समाज का गठन होता है। हम समाज की एक इकाई हैं।

आशा है आपका यह लोकप्रिय साप्ताहिक पत्र भविष्य में भी उसीप्रकार के महत्वपूर्ण लेखों का प्रकाशन करता रहेगा।

भवदीय

डॉ. पूरन सहगल
कृष्णायन/उषागंज
मनासा, जि. नीमच
म. प्र. - ४५८११०

VI. বর্তমানে শব্দ দূষণের ফলে মানুষের যে মানসিক ও শারীরিক ক্ষতি হচ্ছে, সে বিষয়ে একটি অনুচ্ছেদ (২৫টি বাক্য) লিখুন।

টিপ্পণিয়াঁ

হেতু হেতুমত্ ভূতকাল के वाक्यों का प्रयोग दिखाया गया है। ऐसी वाक्य रचना में दो उपवाक्य होते हैं। पहला शर्त उपवाक्य और दूसरा मुख्य उपवाक्य अर्थात् पहला उपवाक्य एक शर्त के रूप में होता है और दूसरा मुख्य कथन के रूप में। बंगला में ऐसे होनेवाले वाक्य दो प्रकार के होते हैं।

I. पहले प्रकार के वाक्यों में शर्त वाले उपवाक्य के आरम्भ में 'যদি' (यदि) लगाया जाता है और मुख्य कथन के पहले 'তো' (तो), 'তাহলে' (ताहोले) का प्रयोग किया जाता है। जैसे :

যদি চারিদিকে প্রচুর গাছপালা থাকতো, তাহলে বৃষ্টি হতো।	यदि चारों ओर बहुत पेड़ पौधे होते तो बारिश होती।
যদি আপনি আসেন তাহলে আমি যাবো।	यदि आप आएँगे तो मैं जाऊँगी।

शर्तवाले उपवाक्य को निषेधात्मक करने के लिए क्रिया के पहले 'না' (ना) जोड़ा जाता है। दूसरे या मुख्य कथनात्मक वाक्यों को निषेधात्मक बनाने के लिए क्रिया के बाद 'না' (ना) जोड़ा जाता है। जैसे :

যদি চারিদিকে গাছপালা না থাকত তবে বৃষ্টিও হত না।	यदि/अगर चारों और बहुत पेड़ पौधे नहीं होते तो बारिश नहीं होती।
যদি আপনি না আসেন তবে আমিও যাব না।	यदि/अगर आप नहीं आए तो मैं नहीं जाऊँगी।

II. दूसरे प्रकार के शर्तवाले वाक्य बनाने के लिए पहले अर्थात शर्तवाले उपवाक्य में धातु का रूप बदलना पड़ता है। धातु के तिर्यक रूप में 'লে' (ले) लगाकर नया रूप बनाते हैं। इस प्रकार शर्तवाले उपवाक्यों की मुख्यक्रिया असमापिका क्रिया के रूप में परिवर्तित हो जाती है। ऐसे वाक्यों में 'যদি' (यदि) अथवा 'তাহলে' (ताहोले) का प्रयोग नहीं होता है। जैसे :

আশেপাশে অনেক গাছপালা থাকলে দুর্ঘেনার প্রকোপ কম হতো।	आसपास बहुत पेड़ पौधे होने से दुर्घटना की संभावना कम होती।
আপনি খেলে আমি খাব।	आप (के) खाने से मैं खाऊँगी। (आप खाएँगे तो मैं खाऊँगी।)

इस प्रकार के वाक्यों को भी पूर्व की तरह निषेधात्मक बना सकते हैं। जैसे :

আপনি না খেলে আমি খাব না।	आप न खाने से मैं नहीं खाऊँगी। (आप नहीं खाएँगे तो मैं नहीं खाऊँगी।)
আপনি না খেলে আমি খাব না।	आप नहीं खाने से मैं नहीं खाऊँगी। (आप नहीं खाएँगे तो मैं नहीं खाऊँगी।)
আপনি খেলে আমি খাব না।	आप खाने से मैं नहीं खाऊँगी। (आप खाएँगे तो मैं नहीं खाऊँगी।)

द्रष्टय : असमापिका क्रियाओं के निषेधात्मक रूप बनाने के लिए सदा क्रिया के पहले 'না' (ना) लगाया जाता है।

ह आदमी अच्छा गाना गाता है।